



भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० २५।

नई दिल्ली, शनिवार, जून 22, 1991 (आषाढ़ 1, 1913)

No. 25]

NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 22, 1991 (ASADHA 1, 1913)

(इस भाग से भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग मंकलन के रूप में रखा जा सके)

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय

१८६

पञ्च

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उपबन्धन न्यायालय द्वारा जारी की गई विनियमन नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों के संबंध में अधिसूचनाएँ	123	भाग II—खण्ड 1—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांख्यिक नियमों और सांख्यिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वल्प की उपविधियाँ भी शामिल हैं) के निर्देशों अधिष्ठित पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उपबन्धन न्यायालय द्वारा जारी की गई सार्वजनिक अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्ध में अधिसूचनाएँ	211	भाग II—खण्ड 1—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांख्यिक नियम और आदेश	
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई संकल्पों और असांख्यिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएँ	5	भाग III—खण्ड 1—उपबन्धन न्यायालयों, नियुक्त और महाविद्यालयों, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ	602
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारों अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएँ	883	भाग III—खण्ड 2—पब्लिक कार्यालय द्वारा जारी की गई वेब्सों और विचारों से संबंधित अधिसूचनाएँ और मोटिव	703
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य भागों के प्राधिकार के अधीन तथा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ	*
भाग II—खण्ड 2—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का ऐन्डी मापा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III—खण्ड 4—विधिवे अधिसूचनाएँ जिनमें सांख्यिक विधायी द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ, आदेश, विज्ञापन और मोटिव शामिल हैं	1807
भाग II—खण्ड 3—विशेष तथा विशेषों पर प्रकर माप (यिसे के बिना तथा किनेट)	*	भाग IV—रक्षा मंत्रालय अधिकारियों और सेना मंत्रालय अधिकारियों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और मोटिव	81
भाग II—खण्ड 4—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांख्यिक नियम (जिनमें सामान्य स्वल्प के आदेश और उपविधियाँ शामिल भी शामिल हैं)	*	भाग V—संघ शासित क्षेत्रों के शासकों द्वारा जारी किए गए अधिसूचनाओं के संबंधों, जो धर्मनिरपेक्ष	
भाग II—खण्ड 5—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांख्यिक आदेश और अधिसूचनाएँ	*		

CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	523	PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (II)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	741	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Regulations and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	5	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	603
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	883	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	703
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1967
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	81
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (I)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*	PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (II)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*		

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों में संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions Issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति अधिकारालय

सह विज्ञप्ति, दिनांक 1 जून 1991

सं० 83-प्रैज/91—इस मंत्रालय की दिनांक 28 जुलाई, 1979 की अधिसूचना सं० 33-प्रैज/79 में प्रकाशित पूर्णता सारणी में राष्ट्रपति द्वारा अनुमोदित निम्न लिखित संशोधन सामान्य सूचना के लिए अधिसूचित किया जाता है :—

(क) अनुच्छेद 11 में —

“मंत्रिमंडल मंत्रि” की प्रविष्टि के साथ “मुख्य चुनाव आयुक्त” जोड़ें।

(ख) अनुच्छेद 17 में—

“मुख्य चुनाव आयुक्त” की प्रविष्टि को समाप्त करें।

दिनांक 6 जून 1991

सं० 70-प्रैज/91—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा बल के नियुक्ति अधिकारी की उसकी बीरता के लिए पुलिस पदक सहाय प्रदान करते हैं।

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री सीताधर उप्रेती (मरणोपरान्त)

नौम नायक सं० 750026738

106वीं बटालियन,

सीमा सुरक्षा बल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया

27 फरवरी, 1990 को सीमा सुरक्षा बल की 106वीं बटालियन के आठ कॉमिंडो (नाम नायक सीताधर उप्रेती सहित) को गश्त लगाने तथा टाक मुख्यालय आहूत में बटालियन मुख्यालय, फिरोजपुर को बल ले जाने के लिए विस्तृत निर्देश दिए गए। दल साय लगभग 8.45 बजे टाक मुख्यालय में रवाना हुआ। नाम नायक सीताधर उप्रेती और कान्स्टेबल हाडे को 7.62 एम० एल० आर० के साथ भारीरक्षण इगूटी सीपी गई।

लगभग साय 5.00 बजे, जब वे अपनी राई के पार थे तो उनके बाहुन पर ऊंची कसली में छिपे हुए उग्रपातियों द्वारा भात

लगाकर हमला किया गया। उग्रपातियों ने गोशियों को दो बीछार की और जैसे ही बाहुन घटना स्थल से आगे गये, उग्रपातियों ने पीछे से गोली चलायी जारी रखी। दिन प्रकिया में स्थपतित इधियारी से चलाई गई गोशियों को बीछार के सोबे पहान ने श्री सीताधर उप्रेती के पेट में गम्भीर जख्म हो गए। गोशियों की प्राप्ति बीछार के कारण कान्स्टेबल/हाइवर इधिया कीरती का भी बाया कंधा जखमी हो गया।

यद्यपि श्री उप्रेती का काफी खून बह रहा था फिर भी उन्होंने तेजी से जवाबी हमला किया और बाहुन के पिछले भाग से उग्रपातियों पर अपनी एन० एल० आर० से सविराम बाठ राउन्ड गोशिया जलायी। श्री उप्रेती द्वारा मनाई गई गोली का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उग्रपाती अन्य वस्तुओं के साथ एन० के०-47 की 281 गिय राउन्ड, 21 खाली राउन्ड घटना स्थल पर ही छोड़कर वहां से भाग गए। जख्मों के बावजूद कान्स्टेबल/हाइवर इधिया कीरती बाहुन का पलायन मंत्रि अस्पताल पिता अपु के पास। डॉक्टरों द्वारा पूरी कोशिश करने के बावजूद भी उप्रेती अंरने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए। तथापि, कान्स्टेबल/हाइवर इधिया कीरता को वही औरेशन करने के साथ पुरा किया गया और उनके कंधे से दो गोशिया निकाली गई।

इस मुठभेड़ में श्री सीताधर उप्रेती, वीर तनू ने अछुन्द कीरता, साहू और उन्नतकॉटि की कर्मचयराधना का परिचय दिया।

यह पदक पुलिस आर 8 नियमावली के तार 4(1) के अंतर्गत कीरता के लिए दिया जा रहा है तथा कान्स्टेबल/हाइवर इधिया के अंतर्गत विशेष स्वीकृता भत्ता की दिनांक 27 फरवरी, 1990 से दिया जाएगा।

सं० 71-प्रैज/91—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा बल के नियुक्ति अधिकारियों की उसकी बीरता के लिए पुलिस पदक सहाय प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री धर्म मिश्र,

सहायक फर्मिड,

तोमरी बटालियन

सीमा सुरक्षा बल।

श्री करतार चन्द

(सरणीपणन)

निरीक्षक सं० 674220281

तीसरी बटालियन,

सीमा सुरक्षा बल ।

सेवासों का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया

दिनांक 9 दिसम्बर, 1989 को करीब 1340 बजे सीमा सुरक्षा बल की तीसरी बटालियन के सहायक कमांडेंट श्री धर्म सिंह को सूचना प्राप्त हुई कि गांव कमला बोवला में कुछ उपद्रवाचारी मौजूद हैं। उन्होंने दायरगैस द्वारा निरीक्षक करतार चन्द को तुरन्त निर्देश दिए कि वे उपलब्ध सुरक्षा बल के साथ उस गांव की ओर प्रस्थान करें। अपनी सुरक्षा पार्टी को साथ लेकर श्री धर्म सिंह भी उस गांव के लिए रवाना हो गए।

उन्होंने गांव की गैर किया और बचकर भागने के सभी संभव रास्तों को बन्द कर दिया। उसका दल दो घरों में विभाजित हो गया, जिनमें से एक दल का नेतृत्व श्री धर्म सिंह ने किया तथा दूसरे दल का नेतृत्व निरीक्षक करतार चन्द ने किया। दोनों घरों ने घरों की मलापटी लेनी आरम्भ कर दी परन्तु उन्हें उपद्रवाचारियों का कोई पता न मिल सका।

करीब 1440 बजे निरीक्षक करतार चन्द के नेतृत्व वाला दल गुरदीप सिंह नामक व्यक्ति के घर की ओर बढ़ा। उस घर में छुपे हुए उपद्रवाचारियों ने स्वचालित हथियारों से पुलिस बल पर गोली बारी करनी आरम्भ कर दी। दल के कर्मियों ने तुरन्त मोर्चा संभाला और जवाब में गोली चलाई। कुछ समय तक दोनों ओर से गोली बाने होती रही जबकि बाद गोली-बारी रुक गई। अपने दल के लिए घर की दीवार का सहारा लेते हुए तथा अपनी जान को जोखिम में धार कर निरीक्षक करतार चन्द द्वारा से एक हथगोला लेकर रंगले झुण्ड पर कि छत की ओर बढ़े। उन्होंने अपने धातु पैर से ठोकर मारकर खरबाओं को का और हथगोला अन्दर फेंक दिया। यह देखकर उपद्रवाचारियों ने निरीक्षक करतार चन्द पर गोलीबारी बरसाई। गोली लगने से उनका दाहिना अंगुली तो गया और वे रंगले झुण्ड की ओर बढ़े और दीवार की आड़ लेकर अपने अंगुली का नेतृत्व करने लगे। कुछ देर बाद गोली-बारी बन्द हो गई तथा दल के कर्मियों ने पाया कि श्री करतार चन्द को घायलों के कारण मृत्यु हो चुकी है।

गोली-बारी की आवाज सुनकर श्री धर्म सिंह अपना स्थल पर पहुँचे और उस घर का चारा और से घेर लिया तथा घेरे के उस भाग पर भीषण गोली-बारी को जहाँ उपद्रवाचारी छुपे हुए थे। उसके बाद श्री धर्म सिंह ने वेधार्थ साथ वाले मकान के पोछे में एक स्मॉल भाग रहा था, जिसमें पुलिस दल पर गोली चलाती आरम्भ कर दी। श्री धर्म सिंह और उन ही पार्टी के लोग ने उन घर की पारखीबारी की आवाजें गयीं तथा वे घर की ओर आगे बढ़े।

वह रंग कर घर की ओर गए और कमरे की पारखी दीवार के मजबूत पट्टे पर दीवार से एक छिपी हुई निकाल ली। इस पर आतंकवादियों ने श्री धर्म सिंह पर दूर से धमाका किया परन्तु सीधे। अब उनकी बाँट नहीं लगी और उन्होंने कमरे में एक हथी से गोला फेंक दिया। कुछ देर बाद उन्होंने छेद में से अन्दर झाँक कर देखा परन्तु वहाँ कोई भी उपद्रवाचारी नजर नहीं आया। तथापि, उन्होंने कमरे में

कुछ मिट्टी के अनाज रखने के बर्तन रखे हुए देखे। उन्हें उन बर्तनों में उपद्रवाचारियों के छुपे रहने का शक हुआ। वे घर की छत पर चढ़ गए। जैसे ही छत पर चढ़े तो उपद्रवाचारी ने उन पर दूर से एक धमाका किया जिससे छत में एक बड़ा छेद हो गया परन्तु श्री धर्म सिंह पुनः सुरक्षित बच निकले। जब उन्होंने उस छेद में एक हथगोला फेंका तो सीधा उन मिट्टी के बर्तन पर गिरा और उन ही से मारा गया। गांव वाले घर की पारखी लेते हुए बा बाँट उपद्रवाचारियों के पता लगाने लगे। मुग उपद्रवाचारियों को बल में तुरन्त बिड़ बोला, हुक्मत दिए उन्हें रातू तथा अगली रातू उन्हें कोलों के रूप में शिनायत की गई।

इस मुठभेड़ में श्री धर्म सिंह, सहायक कमांडेंट तथा श्री करतार चन्द, निरीक्षक ने उद्भूत खतरना में साहस और उत्सुकता की कार्यप्रणाली का परिचय दिया।

ये पदक पुलिस तथा नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत पुरस्कार के लिये दिये जा रहे हैं तथा कन-कन नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत पता दिनांक 9 दिसम्बर 1989 को दिया जाएगा।

सं० 72-अंश/91-—र.प्र.वि. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नांकित अधिकारियों को उनका बीरता के लिए पुलिस पदक सहित प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री वालक राम,

रेज-कन्स्टेबल सं० 810080545,

चौथी बटालियन,

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

श्री कमलेश कुमार,

नायक सं० 680501236

चौथी बटालियन,

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

सेवासों का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया

8 नवम्बर, 1989 को लगभग 0900 बजे पुलिस अधीक्षक (परिपालन), किंगजपुर से एक सूचना प्राप्त हुई कि आतंकवादी सुबमिन्दर सिंह चौधरी द्वारा अपने दल के सदस्यों के साथ गणहत्याना गांव के एक कान्ठे जंगल में मौजूद हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की चौथी बटालियन के 88 कर्मिका का एक दल (हूड कन्स्टेबल वालक राम और नायक कमलेश कुमार सहित) तुरन्त उक्त स्थल की ओर रवाना हुआ। दल की तीस दूरा ने विभाजित किया गया और प्रस्थान करने से पहले उन्हें बंदूकी-स्वयं और गला की जाने क्षमता कार्यवाई के खतरे में समझाया गया।

चौथी बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कमांडेंट और पुलिस अधीक्षक (परिपालन), किंगजपुर के नात्व वाले आतंकवादी दल ने जहाँ पहुँचकर आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए अनकाश जेकेन आतंकवादियों से

स्वचालित हथियारों से धुआधार गोली चलानी शुरू कर दी। कमान्डेंट के निर्देश में श्री बालक राम और नायक कमलेश कुमार ने काफी नियंत्रित ढंग से आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए मजबूर करने के लिए उस फार्म हाउस पर जबाबी गोली चलाई। जबकि अन्य दो दल अपने-अपने स्थानों पर फार्म हाउस से आतंकवादियों के बाहर निकालने का इंतजार करते रहे। लेकिन आतंकवादी फार्म हाउस से गोली चलाते रहे। तब एक के बाद एक जल्दी-जल्दी सतत एच० ई० बस फार्म हाउस के चारों ओर चलाए गए। उसके बाद छः आतंकवादी दीवार लांचर कूद पड़े और उन्होंने पश्चिमी दिशा की ओर धाव के छेतों की तरफ भागना प्रारम्भ किया। इस बीच अन्य दो दलों ने आतंकवादियों को व्यस्त रखा। जब आतंकवादी लड़ रहे थे तो फार्म हाउस की छत से भी बचाव में गोलियां चल रही थी।

तुरन्त फार्म हाउस का दरवाजा तोड़ दिया गया और आक्रामक दल ने जिसमें हैड कान्स्टेबल बालक राम, नायक कमलेश कुमार, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, चौथी बटालियन के कमान्डेंट और पुलिस अधीक्षक (परिचालन), फिरोजपुर शामिल थे, प्रांगण में प्रवेश किया। एक व्यक्ति को प्रथम तल पर मोर्चा संभालते हुए देखा गया। तुरन्त घर को घेर लिया गया और श्री बालक राम और श्री कमलेश कुमार घर की छत पर चढ़े, तथा एक कमरे में घुसे, जहाँ से आतंकवादियों पर सीधे एल० एम० जी० से गोली चलाना संभव था। दोनों ओर से लगभग 45 मिनट तक गोलियां चलती रही। उसके बाद श्री बालक राम और श्री कमलेश कुमार ने हथगोले फेंके और अपनी कारबाइन से भी गोलियां चलाई। भारी गोली-बारी ने और हथगोलों ने आतंकवादियों की हक्का-बक्का कर दिया और तब श्री बालक राम और श्री कमलेश कुमार मुंडेर पर कूद सके। नायक कमलेश कुमार ने दो आतंकवादियों को छत के ऊपर देखा और वे प्रांगण में गोली चलाने के लिए तैयार थे। आतंकवादियों ने भी नायक कमलेश कुमार को देखा। वे तुरन्त प्रथम तल के छज्जे पर चढ़े और उन्होंने बुरामदे में गोली की बौछार की। आतंकवादियों ने श्री कमलेश कुमार पर गोली चलाई लेकिन वे सीमाश्रयण सुरक्षित बच गए तथा तब वे नीचे कूद पड़े।

उसके बाद श्री बालक राम भिन्न दिशा से खिड़की के छज्जे पर चढ़े। उन्होंने दीवार की मुंडेर से झाँककर आतंकवादियों की सही स्थिति जानने का प्रयास किया। भागने वाले आतंकवादियों के बचाव में गोली चलाने के लिए छज्जे पर आड़ में खड़े आतंकवादियों ने तुरन्त श्री बालक राम पर गोली चलाई। श्री बालक राम ने भी आतंकवादियों पर जबाब में गोली चलाई। इसी समय उनके राइफल की मीगजीन समाप्त हो गयी। उन्होंने बहुत सूझ-बूझ से काम लेते हुए जल्दी-जल्दी एक के बाद तीन हथगोले फेंके, जिसके परिणामस्वरूप छज्जे पर आड़ में खड़े दोनों आतंकवादियों की मृत्यु हो गयी।

इसी बीच अन्य दलों द्वारा शेष छः आतंकवादी भी मारे गए। मुठभेड़ में कुल मिलाकर छः आतंकवादी मारे गए लेकिन सुखमिन्दर सिंह दीपसिंहवाला नामक केवल एक ही आतंकवादी की शिनाख्त हुई।

इस मुठभेड़ में श्री बालक राम, हैड कान्स्टेबल और श्री कमलेश कुमार, नायक ने उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 8 सितम्बर, 1989 से दिया जाएगा।

सं० 73-प्रेज/91--राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री सुरजीत सिंह,

पुलिस उप-अधीक्षक नं० जे/2,

फिरोजपुर।

श्री हरदेव सिंह,

पुलिस उप-निरीक्षक नं० 1/एफ० आर०,

थाना घल्ल खुर्द।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया

2 अगस्त, 1990 को श्री सुरजीत सिंह, पुलिस उप-अधीक्षक को यह सूचना प्राप्त हुई कि आतंकवादियों ने जोरा पुलिस स्टेशन क्षेत्र के मसूरवाल खुर्द गांव के किरपाल सिंह नामक एक व्यक्ति के घर में दो अपहृत व्यक्तियों को बंदी बनाकर रखा हुआ है। श्री सुरेन्द्र सिंह ने थाना घल्ल खुर्द के थानेदार, उप-निरीक्षक श्री हरदेव सिंह सहित पंजाब पुलिस को एक टुकड़ी तथा सीमा सुरक्षा बल की तीसरी बटालियन के कार्मिकों को तत्काल व्यवस्था को और आतंकवादियों के छिपने के स्थान की ओर खाना हुए। उन्होंने किरपाल सिंह के घर पर छापा मारा और वहाँ की तलाशी ली परन्तु वहाँ न तो अपहृत व्यक्ति मिले और न ही कोई उग्रवादी मिला।

आगे उन्हें यह सूचना मिली कि दो आतंकवादी उसी गांव में जोरा सिंह के घर में छिपे हुए हैं। इस सूचना के मिलने पर पुलिस दल ने तुरन्त उस क्षेत्र को घेर लिया और सामरिक ढंग से जोरा सिंह के घर में छापा मारा। श्री सुरजीत सिंह ने उक्त मकान की तीन दिशाओं से घेरने के लिए उनके निकटवर्ती मकानों की छतों पर तीन एल० एम० जी० लगा दी। उन्होंने मकान में छिपे हुए लोगों को आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा परन्तु आतंकवादियों ने उन पर गोलियां चलानी शुरू कर दी। उन्होंने सभी दलों को आत्मरक्षा के लिए गोली का जबाब गोली से देने का आदेश दिया तथा अपने एक बंदूकधारी से

एल० एम० जी० नेफर स्वयं गोली चलायी शुरू कर दी। सभी ओर से लगभग 2 घण्टे तक भारी गोली-बारी जारी रही। एक आतंकवादी ने बचकर भागने की कोशिश करने के लिए श्री सुरजीत सिंह पर ए० के०-47 से गोदियों की बौछार कर दी परन्तु श्री सुरजीत सिंह ने तुल्ल अर्पण दूसरे संरक्षार्थी से एक ए० एल० आर० श्री और ले नेजी से सफल की छत से नीचे बहक पर कूद गए तथा अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादी की ओर दौड़े तथा सजरीक से ए० एल० आर० से आतंकवादी पर गोदियों की बौछार की और घटना स्थल पर ही उसे मार गिराया।

उसी समय दूसरा आतंकवादी जो ओरा सिंह के सफात के पीछे की दीवार से उप-निरीक्षण हेतु सिंह के घन पर गोली चला रहा था, गुगार पर गिरा और निकटवर्ती सफात की ओर कूद पड़ा। अनु-देखार श्री सुरजीत सिंह तुल्ल उस सफात की छत पर चढ़ा हुए गए और अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादी के सामने जाकर उस पर गोली चलाई और उसे घटनास्थल पर ही शरावायी कर दिया। दोनों ओर से गोली-बारी एक जाले पर श्री सुरजीत सिंह ने सफात में छिप हुए लोगों को अपने साथ खड़े करके बाहर आने तथा आत्म-समर्पण करने को कहा। इस पर जोरा सिंह के सफात से दो परजित लोग आए। वे उपर्युक्त वर्णन से, जिसका साथ मुख्य गुगार और पूरन धर पर गया जिसमें दोनों को गिरा करी बताया हुआ था। मृत आतंकवादी को बाह में ताबड़ सिंह तथा अमरनाथ सिंह को गला में लपकाए ली गई।

इस घटना में श्री सुरजीत सिंह, तुल्ल उपर्युक्त तथा श्री सुरजीत सिंह, गुगार उप-निरीक्षण ने उद्घाटन किया, सहाय और उच्च कोटि की कार्यवाहयता का परिचय दिया।

वे परक पुलिस पदक विभागीयों के नियम 4(1) के अन्तर्गत वारता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 2 अगस्त, 1990 में दिया जाएगा।

सं० 74-अ/91-रा.पु.वि.सि., दिनांक प्रकाशन के निम्नलिखित अधिकारी को उसकी बारीक के लिए पुलिस पदक सर्वप्रकार प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद :

श्री किरपाल सिंह,

कान्स्टेबल सं० 7981/डा० ए० सी०,

चिन्ता।

संभावना का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया

जब श्री किरपाल सिंह, कान्स्टेबल 24 मई, 1990 को दिला गया मेले स्थेशन के पदार्थ सं० 1 पर हथौड़ी पर थे, तो केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के हेड कान्स्टेबल

श्री महावीर प्रसाद ने मेले स्थेशन पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के पुलिस उप-अधीक्षक और एक उप-निरीक्षक को गोली मारी और भारी हुई राईफल के साथ फरार हो गया।

श्री किरपाल सिंह, कान्स्टेबल गफान, एक उप-निरीक्षक और एक कान्स्टेबल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और अभियुक्त की तलाश में गए। बताया गया कि अभियुक्त पदार्थ सं० 15/16 पर फुट ओवर ब्रिज के नजदीक खड़ा था। उपर्युक्त रथवा आक्रमक था और गोली चलाने के लिए राईफल लेकर तैयार था। थोड़ी दूरी पर होने के कारण जब जीवन के लिए यह खतरनाक स्थिति थी और इसलिए अभियुक्त को दबोचना और उसे निश्चय करना जरूरी था।

यह जानते हुए कि आक्रमणकारी शरीर हुई राईफल में लगे थे श्री किरपाल सिंह, कान्स्टेबल ने अपने जीवन को खतरे में डालकर आक्रमणकारी को पीछे से छिपकर पकड़ लिया। आक्रमणकारी ने किरपाल सिंह पर गोली चलाई और गोली उसके छाती के बाहिरी तरफ लगी जिसकी होने के बावजूद उसने आक्रमणकारी को भागने नहीं दिया। उसके बाद दूसरा कान्स्टेबल बहा पर पहुंच गया और मेगर्जन से राईफल को पकड़ लिया। हेड-कान्स्टेबल महावीर प्रसाद कान्स्टेबल देवेश गुगार पर गोली चलाना चाहता था लेकिन किरपाल सिंह ने कान्स्टेबल को बचाने के लिए बहावा होने से पहले भरो हुई राईफल का निशाना बदल दिया। कान्स्टेबल देवेश गुगार के निहारे पर श्री गोसी लगे से बाह हो गए। श्री किरपाल सिंह को उपर्युक्त के लिए तुल्ल अर्पण में आया गया। इसी बीच अन्य पुलिस ठाईको ने महावीर प्रसाद को घेर लिया और उसे 303 राईफल से साथ पकड़ लिया।

इस घटना में श्री किरपाल सिंह, कान्स्टेबल न उद्घाटन बारीक, सहाय और उच्च कोटि की कार्यवाहयता का परिचय दिया।

यह परक पुलिस पदक विभागीयों के नियम 4(1) के अन्तर्गत वारता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 24 मई, 1990 में दिया जाएगा।

ए० के० उपाध्याय,
निदेशक

नूतन और प्रसारण मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 30-4-91

सं० 315/2/91-एफ (पी)—जन संचार के दिनांक 12-9-75 के सकल संख्या 6/10/75-एफ (पी) के अनुपालन में तथा इन दिवस पर पिछली आधुनिकता के आक्रमण में,

केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निम्नलिखित व्यक्तियों को फिल्म सलाहकार बोर्ड बम्बई में सदस्य के रूप में 15 मई, 1991 में नामित करती है।

- (1) श्री बासु भट्टाचार्य, फिल्म निर्माता और निर्देशक, बम्बई।
- (2) डी० डी० मिश्रा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, खालसा कालेज, बम्बई।

(3) श्री प्रताप शर्मा, उपन्यासकार तथा फिल्म निर्माता, बम्बई।

(4) डा० वी० ए० वेंकटराजन, निदेशक, मेहरू प्रोडिक्टोरियम, बम्बई।

2. समिति के सदस्यों का कार्यकाल इस अधिवृत्तना के लागू होने की तारीख से दो वर्ष है।

एन० ए० विश्वनाथन
निदेशक (फिल्मस)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 1st June 1991

No. 69-Pres/91.—The following amendment approved by the President to the Table of Precedence published in this Secretariat Notification No. 33-Pres/79, dated the 26th July, 1979 is notified for general information :—

(a) In Article 11—

Add "Chief Election Commissioner" after the entry "Cabinet Secretary".

(b) In Article 17—

Delete the entry "Chief Election Commissioner"

The 6th June 1991

No. 70-Pres/91.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force.

Name and rank of the officer

Shri Liladhar Upreti, (Posthumous)
Lance Naik No. 750026738,
106 Battalion,
Border Security Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 27th February, 1990, eight personnel of 106 Battalion, Border Security Force (including Lance Naik Liladhar Upreti) were detailed for patrolling and carrying of dak from Tac Headquarter, Wahka to Battalion Headquarter, Ferozepur. The party left Tac Headquarter at about 1845 hours. Lance Naik Liladhar Upreti and Constable Hande were assigned the escort duty with 7.62 SLRs.

At about 1900 hours, when they were near village Attari, the extremists, who were hiding in high crops ambushed the vehicle. The extremists fired two bursts of bullets and as the vehicle passed from the place of incident, the extremists continued firing from the rear. In the process Shri Liladhar Upreti sustained severe bullet injuries in his stomach due to direct hit of burst fired from automatic weapons. Constable/Driver Eshappa Konathi also received bullet injury on his left shoulder due to this direct burst of fire.

Although Shri Upreti was profusely bleeding, he reacted swiftly and fired eight rounds at intermittent of intervals from his SLR on the extremists from the rear of the vehicle. The impact of fire by Shri Upreti was so great that the extremists fled away from the place of incident leaving behind 281 live rounds of AK-47, 21 empty rounds along with other items. In spite of injuries Constable/Driver

Eshappa Konathi drove the vehicle to Civil Hospital, Ferozepur. In spite of best efforts of the doctors, Shri Upreti succumbed to his injuries. However, Constable/Driver Eshappa Konathi was saved after a major operation and two bullets were removed from his shoulder.

In this encounter Shri Liladhar Upreti, Lance Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(1) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 27th February, 1990.

No. 71-Pres/91.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force.

Name and the rank of officers

Shri Dharam Singh,
Assistant Commandant,
3rd Battalion,
Border Security Force.

Shri Kartar Chand (Posthumous)
Inspector No. 674220281,
3rd Battalion,
Border Security Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 9th December, 1989, at about 1340 hours, Shri Dharam Singh, Assistant Commandant of 3rd Battalion, Border Security Force received information that some extremists were present in village Kamala Bodhla. He immediately instructed Inspector Kartar Chand on wireless to move to the village alongwith available force. Shri Dharam Singh alongwith his escort party also rushed to that village.

They cordoned the village and plugged all possible escape routes. The party was divided into two groups, one was headed by Shri Dharam Singh the other by Inspector Kartar Chand. Both the parties started searching the houses but they could not find any clue of extremists.

At about 1440 hours, the party led by Inspector Kartar Chand approached the house of Gurdip Singh. The extremists hiding in the house opened fire with automatic weapons on the police party. The party personnel immediately took positions and returned the fire. The exchange of fire continued for some time. Thereafter fire was stopped. Inspector Kartar Chand by taking the cover of wall of the house, with great risk to his life, crawled towards the door with a hand grenade in his hand. He kicked opened the door with the right foot and lobbed the grenade inside the room. On this the extremists opened fire on Inspector Kartar Chand. He received bullet injuries on his leg. He crawled back and took cover of a wall and continued leading his men. After some time firing stopped and the party personnel noticed that Shri Kartar Chand had succumbed to his injuries.

On hearing the sound of firing Shri. Dharam Singh reached the spot, cordoned the house and opened heavy fire on the house where the extremists were hiding. Thereafter Shri Dharam Singh noticed that one person was running from the rear side to the adjoining house and started firing on the police party. Shri Dharam Singh and his party took cover of the boundary wall and advanced towards the house.

He crawled towards the house, reached near the side wall of the room and took out a loose brick from the wall. On this the extremists fired a long burst at Shri Dharam Singh but luckily he escaped unhurt and lobbed a hand grenade in the room. After some time he peeped through the hole but there was no trace of any extremist. However, he noticed some earthen grain containers in that room. He suspected that the extremist might be hiding in that container. He climbed on the roof of that house. As he climbed the roof, the extremist fired a long burst on the roof which made a big hole there but Shri Dharam Singh again luckily escaped. He then lobbed a hand grenade through the hole which landed straight in the earthen container and killed the extremist. During the search of the adjoining house, two more dead bodies of extremists were recovered. The dead extremists were later identified as Gurmej Singh Chole, Kulwant Singh alias Raju and Jagjit Singh alias Fauji.

In this encounter Shri Dharam Singh, Assistant Commandant and Shri Kartar Chand, Inspector Displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under rule 4(4) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 9th December, 1989.

No. 72-Pres/91.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Names and rank of the officers

Shri Balak Ram,
Head Constable No. 640080545,
4 Battalion,
Central Reserve Police Force.

Shri Kamlesh Kumar,
Naik No. 680501236,
4 Battalion,
Central Reserve Police Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 8th September, 1989 at about 0900 hours information was received from the Superintendent of Police (Operations), Ferozepur about the presence of a dreaded terrorist Sukhminder Singh Deepsingwala alongwith his gang members in a farm house in village Jhanduwalla. Immediately a Central Reserve Police Force party of 4 Battalion consisting of 88 personnel (including Head Constable Balak Ram and Naik Kamlesh Kumar) left for the place. The party was divided into three groups and they were earmarked and briefed before the departure.

On reaching there the assault party under the command of the Commandant, 4 Battalion, Central Reserve Police Force and the Superintendent of Police (Operations), Ferozepur challenged the terrorists to surrender but the terrorists opened indiscriminate firing from automatic weapons. On the direction of the Commandant, Shri Balak Ram and Naik Kamlesh Kumar returned the fire at the building in a very controlled manner to force the terrorists to come out. Whereas other two parties waited at their respective places for the terrorists to come out of the farm house. But the terrorists chose to fire from within the farm house. Then seven H.E. bombs were fired around the farm house in quick succession. Thereafter six terrorists jumped over the wall and started running in the Western side, towards the paddy fields. In the meantime the other two parties engaged the terrorists. While the terrorists were fighting a battle, they were getting a covering fire from the roof of the farm house.

Immediately the door of the farm house was broken open and the assault party consisting of Head Constable Balak Ram, Naik Kamlesh Kumar with the Commandant of 4 Battalion, Central Reserve Police Force and the Superintendent of Police (Operations), Ferozepur entered the courtyard. One person was seen taking position in the first floor. Immediately the house was cordoned and Shri Balak Ram and Shri Kamlesh Kumar climbed on the roof of the house, entered one of the rooms from where it was possible to direct LMG fire on the terrorist. The exchange of fire continued for about 45 minutes. Thereafter Shri Balak Ram and Shri Kamlesh Kumar lobbed grenades and also fired with their carbines. Heavy fire and the grenades stunned the terrorists and it was then possible for Shri Balak Ram and Shri Kamlesh Kumar to jump over a parapet. Naik Kamlesh Kumar saw two terrorists on the top of the roof and they were ready to fire in the courtyard. The terrorists also noticed Naik Kamlesh Kumar. He immediately climbed on the sunshade of the ground floor and fired a burst on the terrace. The terrorists fired on Shri Kamlesh Kumar but luckily he escaped unhurt, then he jumped down.

Thereafter Shri Balak Ram climbed on the sun-shade of the window from different angle. He tried to locate the exact position of terrorists by peeping over the parapet wall. The terrorists, who had taken shelter on the terrace for giving covering fire to the fleeing terrorists, immediately fired on Shri Balak Ram, who fired back on the terrorists. At this point, he had exhausted the magazine of the rifle, showing immense presence of mind he lobbed three grenades in quick succession which resulted in the death of both the terrorists on the terrace.

In the meantime the remaining six terrorists were killed by other parties. In the encounter, in all 8 terrorists were killed but only one terrorist Sukhminder Singh Deepsingwala was identified.

In this encounter Shri Balak Ram, Head Constable and Shri Kamlesh Kumar, Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under rule 4(1) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 8th September, 1989.

No. 73-Pres/91.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of Punjab Police.

Names and rank of the officers

Shri Surjit Singh,
Deputy Superintendent of Police No. J/2,
Ferozepur.

Shri Hardev Singh,
Sub-Inspector of Police No. 1/FR,
Police Station Ghall Khurd.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 2nd August, 1990, Shri Surjit Singh, Deputy Superintendent of Police received information that two kidnapped persons had been kept as hostages by the terrorists in the house of one Kirpal Singh, village Mansowal Khurd, Police Station Zira. Shri Surinder Singh alongwith Sub-Inspector Hardev Singh, SHO, Police Station Ghall Khurd immediately arranged a contingent of Punjab Police and personnel of 3rd Battalion, Border Security Force and rushed to the hide-out. They raided and searched the house of Kirpal Singh but neither the kidnapped persons nor any extremist could be located.

On receipt of further information that two terrorists were hiding in the house of Jora Singh in the same village, the police party immediately cordoned the area and raided the house of Jora Singh in a tactical manner. Shri Surjit Singh installed three LMGs on the roofs of the adjoining house to cover the said house from three directions. He challenged the occupants of the house and asked them to surrender but the terrorists started firing

on him. He ordered all the parties to return the fire in self-defence and himself took the LMG from his gunman and started firing. The heavy fire from all the sides continued for about 2 hours. One of the terrorists fired burst of AK-47 on Shri Surjit Singh in an attempt to escape but Shri Surjit Singh immediately took an ALR from his other gunman and promptly jumped into the street from the top of the house and without caring for his personal safety rushed towards the terrorist, fired bursts of ALR from close range and killed the terrorist on the spot.

At the same time the second terrorist, who was firing from the rear wall of the house of Jora Singh, on the party of Sub-Inspector Hardev Singh, the terrorist scaled the wall and jumped to the adjoining house. Seeing this Shri Hardev Singh immediately crawled on the roof of that house, without caring for his personal safety exposed himself fired on the terrorist and killed him on the spot. When the firing from both sides stopped, Shri Surjit Singh directed the occupants of the house to come out by raising their hands and surrender. At this two persons came out of the house of Jora Singh. They were kidnapped persons viz. Bhushan Kumar and Puran Chand, who were detained for ransom. The dead terrorists were later identified as Naib Singh and Umer Pal Singh.

In this encounter Shri Surjit Singh, Deputy Superintendent of Police and Shri Hardev Singh, Sub-Inspector of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under rule 4(1) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 2nd August, 1990.

No. 74-Pres/91.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of Delhi Police.

Name and rank of the officer

Shri Kirpal Singh,
Constable No. 7951/DAP,
Delhi.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 24th May, 1990, Shri Kirpal Singh, Constable was on duty at platform No. 1, Delhi Main Railway Station when Shri Mahabir Parshad, Head Constable of Central Industrial Security Force had shot head a Deputy Superintendent of Police and a Sub-Inspector of the Central Industrial Security Force at the Railway Station and absconded with the loaded rifle.

Shri Kirpal Singh, Constable immediately alongwith one Sub-Inspector and one Constable reached the spot and moved in search of the accused. The accused was reportedly standing near foot over-bridge at plat-form No.

15/16. He was in a belligerent mood and holding the rifle in a ready to fire position. His being at large was very risky to public life and it was necessary to overpower the accused and disarm him.

Shri Kirpal Singh, Constable knowing fully well that the assailant was armed with loaded rifle risked his life and caught hold of the assailant stealthily from behind. The assailant fired at Shri Kirpal Singh who received bullet wound on the right side of his chest. Despite the injury he did not allow the assailant to escape. Thereafter the other constable reached there and caught hold of the rifle by its magazine. Head Constable Mahabir Parshad wanted to fire at the Constable Devinder Kumar but Shri Kirpal Singh changed the direction of the loaded rifle to save the constable, before he became unconscious. Constable Devinder Kumar also received butt-injury on his face. Shri Kirpal Singh was rushed to hospital for treatment. In the meantime other police personnel surrounded Mahabir Parshad and captured him alongwith .303 rifle.

In this incident Shri Kirpal Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(1) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5, with effect from the 24th May, 1990.

A. K. UPADHYAY, Director

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

New Delhi, the 30th April 1991

No. 315/2/91-F(P).—In pursuance of the Ministry's Resolution No. 6/10/75-F(P) dated 12-9-75 and in supersession of earlier notifications on the subject the Central Government hereby nominates the following persons as Members of the Film Advisory Board, Bombay with effect from 15th May, 1991.

- (i) Shri Basu Bhattacharya, Film Producer and Director, Bombay.
- (ii) Dr. S.D. Mishra, Head of Department of Hindi, Khalsa College, Bombay.
- (iii) Shri Pratap Sharma, Novelist and Film maker, Bombay.
- (iv) Dr. V. S. Venkatavardan, Director, Nehru Planetarium, Bombay.

2. The term of the Members of the Committee is for 2 years from the date of notification.

N. A. VISWANATHAN,
DIRECTOR (FILMS)

